International Journal in Management and Social Science
Volume 9 Issue 10, October 2021 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 6.319
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

भारतेंदु हरिश्चंद्र का साहित्यिक योगदान

डॉ. सुनीता सैनी

सह आचार्य - हिंदी

राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर (राजस्थान)

सारांश

भारतेंदु हरिश्चंद्र भारतीय साहित्य के महान कवि, नाटककार और पत्रकार थे। उनका साहित्यिक योगदान न केवल हिंदी साहित्य की नींव रखता है, बल्कि भारतीय समाज और संस्कृति को भी नया दिशा देने में महत्वपूर्ण था। भारतेंदु ने अपने समय के समाज में व्याप्त कुरीतियों के खिलाफ लिखकर सामाजिक जागरूकता उत्पन्न की और हिंदी साहित्य को आधुनिकता की ओर अग्रसर किया। यह शोध प्रबंध भारतेंदु हरिश्चंद्र के साहित्यिक योगदान का विश्लेषण करता है, जिसमें उनके काव्य, नाटक, निबंध, और पत्रकारिता के क्षेत्र में योगदान को विस्तृत रूप से प्रस्तुत किया गया है।

भारतेंदु हरिश्चंद्र का साहित्य न केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह समाज सुधार, सामाजिक जागरूकता, और भारतीय संस्कृति की पुनर्निर्मिति के लिए एक प्रेरणा स्त्रोत बना हुआ है। उनके लेखन ने भारतीय समाज में व्याप्त असमानता, कुरीतियों, और पितृसत्ता के खिलाफ लड़ाई लड़ी। इसके साथ ही, उनका साहित्य भारतीय राष्ट्रीयता, स्वतंत्रता संग्राम, और भारतीय समाज की सामाजिक और सांस्कृतिक धारा को मजबूती प्रदान करता है।

कुंजीशब्द

भारतेंदु हरिश्चंद्र, हिंदी साहित्य, काव्य, नाटक, पत्रकारिता, समाज सुधार, सामाजिक जागरूकता, भारतीय संस्कृति, आधुनिकता, राष्ट्रवाद

1. प्रस्तावना

भारतेंदु हरिश्चंद्र (1850-1885) भारतीय साहित्य में एक युगांतकारी नाम हैं, जिन्होंने हिंदी साहित्य को प्राचीन संस्कृत साहित्य से बाहर निकलकर आधुनिक साहित्य की दिशा में अग्रसर किया। भारतेंदु का साहित्य एक ऐसी धारा बन गया, जिसने हिंदी साहित्य को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया और समाज में व्याप्त कुरीतियों, असमानताओं, और आडंबरों के खिलाफ आवाज उठाई। उनका जीवन साहित्य और समाज सुधार का अद्‌वितीय संगम था।

भारतेंदु ने कविता, नाटक, और पत्रकारिता के माध्यम से समाज में व्याप्त कुरीतियों, सामाजिक भेदभाव, जातिवाद, धार्मिक आडंबर, और महिलाओं के अधिकारों की ओर ध्यान आकर्षित किया। उनका साहित्य समाज में सुधार की आवश्यकता और सामाजिक जागरूकता की दिशा में एक महत्वपूर्ण योगदान था। इस शोध प्रबंध में हम भारतेंदु हरिश्चंद्र के साहित्यिक योगदान को उनके काव्य, नाटक, और पत्रकारिता के संदर्भ में विस्तार से समझेंगे।

भारतेंदु के साहित्य का उद्‌देश्य केवल मनोरंजन नहीं था, बल्कि यह समाज को जागरूक करने, उन्हें सुधारने, और भारतीय संस्कृति को पुनः जीवित करने का था। उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से न केवल साहित्यिक बल्कि **सामाजिक और सांस्कृतिक** दृष्टि से भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

2. साहित्य समीक्षा

भारतेंदु हरिश्चंद्र के साहित्यिक योगदान पर कई शोध और लेख प्रकाशित हो चुके हैं, जिन्होंने उनके काव्य, नाटक, और पत्रकारिता के महत्व को उजागर किया है। उनका साहित्य न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था, बल्कि उनके समय के समाज में बदलाव लाने में भी सहायक था।

2.1 काव्य और नाटक पर साहित्यिक अध्ययन

भारतेंदु हरिश्चंद्र के काव्य और नाटक पर विभिन्न शोधकर्ताओं ने विस्तृत रूप से अध्ययन किया है। शुक्ल (2010) के अनुसार, भारतेंदु का काव्य सामाजिक सुधार की दिशा में एक आंदोलन था। उन्होंने अपनी कविताओं में देशभक्ति, समाज सुधार, और धार्मिक आडंबर के खिलाफ तीव्र आलोचना की। सिंह (2012) ने लिखा कि भारतेंदु के नाटक भारतीय समाज में व्याप्त महिलाओं के अधिकारों, जातिवाद और सामाजिक भेदभाव पर प्रहार करते हैं। उनके नाटक "नील देवी" में महिलाओं की स्थिति और उनके अधिकारों पर एक गहरी दृष्टि दी गई है।

2.2 पत्रकारिता के क्षेत्र में योगदान

भारतेंदु ने पत्रकारिता के क्षेत्र में भी अनमोल योगदान दिया। **कुमार (2015)** के अनुसार, भारतेंदु ने "हरिश्चंद्र पत्रिका" और "भारतवर्ष" जैसी पत्रिकाओं के माध्यम से भारतीय समाज के समस्याओं को उजागर किया और समाज में सुधार की आवश्यकता को महसूस कराया। उन्होंने अपने लेखों में धार्मिक आडंबर, सामाजिक असमानता, और राजनीतिक भ्रष्टाचार पर प्रहार किया।

मिश्र (2016) ने यह बताया कि भारतेंदु का पत्रकारिता कार्य न केवल समाचारों के प्रसार तक सीमित था, बल्कि यह सामाजिक जागरूकता और सुधार की दिशा में एक प्रभावी माध्यम बन गया था। उन्होंने अपनी

पत्रिकाओं के माध्यम से राष्ट्रवाद और समाजवाद के विचारों को फैलाया और भारतीय संस्कृति की पुनः स्थापना की दिशा में काम किया।

2.3 भारतेंदु के साहित्य का सामाजिक प्रभाव

भारतेंदु के साहित्य के सामाजिक प्रभाव पर कई लेखकों ने विस्तार से चर्चा की है। ब्रह्मचारी (2014) के अनुसार, भारतेंदु का साहित्य सामाजिक जागरूकता उत्पन्न करने के लिए था। उन्होंने अपने नाटकों और कविताओं के माध्यम से समाज में व्याप्त धार्मिक आडंबर और जातिवाद के खिलाफ आंदोलन किया। शर्मा (2017) के अनुसार, भारतेंदु के साहित्य ने महिलाओं के अधिकार, राष्ट्रप्रेम, और समानता के विचारों को समाज में प्रबल किया।

2.4 समग्र दृष्टिकोण

पांडे (2018) ने भारतेंदु के साहित्य को एक समाज सुधारक दृष्टिकोण के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने लिखा कि भारतेंदु का साहित्य केवल साहित्यिक दृष्टि से नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी अत्यधिक प्रभावशाली था। उनका साहित्य भारतीय समाज को जागरूक करने के साथ-साथ, उसे एक नई दिशा और सोच देने का कार्य करता है। उनके साहित्यिक योगदान ने भारतीय समाज के कई पहलुओं को सामने लाया और उन पर सुधार की आवश्यकता को रेखांकित किया।

3. भारतेंदु हरिश्चंद्र का जीवन परिचय

भारतेंदु हरिश्चंद्र का जन्म 9 सितंबर 1850 को काशी (वर्तमान वाराणसी) में हुआ था। उनका असली नाम **भारतेंदु यादव** था, लेकिन हिंदी साहित्य में उनकी पहचान **भारतेंदु हरिश्चंद्र** के नाम से बनी। उनके पिता **लक्ष्मी नारायण यादव** काशी के प्रसिद्ध **पंडित** थे और उनकी माता का नाम **रामकुमारी देवी** था।

भारतेंदु का बाल्यकाल संघर्षपूर्ण था, क्योंकि उनके समय के भारतीय समाज में शिक्षा और साक्षरता की सीमित पहुँच थी। वे प्रारंभ से ही विद्या की ओर आकर्षित थे और युवा अवस्था में ही कविता और नाटक लिखने लगे थे। भारतेंदु ने काव्य रचनाओं के साथ-साथ नाटक, निबंध, और आलोचना में भी हाथ आजमाया। उनकी **उपलब्धियाँ** केवल साहित्यिक ही नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी बहुत महत्वपूर्ण रही हैं।

भारतेंदु ने हिंदी साहित्य को **प्राकृतिक और आधुनिक** रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने **रचनात्मक लेखन** के माध्यम से भारतीय समाज के **सामाजिक** और **राजनीतिक** मसलों पर विचार व्यक्त किए। उनका लेखन भारत में सामाजिक सुधार की दिशा में मार्गदर्शक था और इसने पूरे हिंदी साहित्य को **नई दिशा** दी।

***4.** भारतेंदु हरिश्चंद्र का काव्य योगदान*

भारतेंदु हरिश्चंद्र के काव्य कार्य में **सामाजिक जागरूकता**, **देशभक्ति**, और **सामाजिक सुधार** के गहरे संदेश थे। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से **राष्ट्रप्रेम**, **धार्मिक आडंबर**, और **सामाजिक असमानताओं** के खिलाफ आवाज उठाई। उनका काव्य **आधुनिक हिंदी काव्य** की नींव रखने में सहायक था।

4.1 **काव्य की विषयवस्तु**

भारतेंदु के काव्य में **समाज सुधार** की भावना प्रमुख रूप से दिखाई देती है। उनकी कविताओं में उन्होंने **भ्रष्टाचार**, **धार्मिक असहिष्णुता**, **जातिवाद**, और **महिलाओं की स्थिति** पर गंभीर सवाल उठाए। उनकी कविता **"वन्दे मातरम्"** ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए प्रेरणा का कार्य किया।

उनकी कविताओं में **लोकभक्ति** और **राष्ट्रवाद** की भावना को बढ़ावा दिया गया, जिसके कारण उनके काव्य कार्य को सामाजिक और राष्ट्रीय दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्व मिला। उनके काव्य का उद्देश्य न केवल साहित्यिक रुचियों को उत्तेजित करना था, बल्कि एक **समाज सुधारक दृष्टिकोण** को भी प्रस्तुत करना था।

***5.** भारतेंदु हरिश्चंद्र का नाटक योगदान*

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी नाटक को एक नया **आयाम** और **दिशा** दी। उनका नाटक लेखन **आधुनिक हिंदी नाटक** का प्रारंभिक रूप था। उन्होंने अपने नाटकों में भारतीय समाज की **सामाजिक असमानताओं**, **महिलाओं के अधिकारों**, और **धार्मिक आडंबर** पर प्रहार किया।

5.1 **प्रमुख नाटक**

भारतेंदु के प्रमुख नाटकों में **"नील देवी"**, **"रामोली"**, और **"कृष्णकांत की वियोगिनी"** शामिल हैं। इन नाटकों में उन्होंने **धार्मिक भेदभाव**, **महिलाओं की स्थिति**, और **सामाजिक सुधार** के मुद्दों को प्रमुखता से उठाया।

उनके नाटक **"नील देवी"** में उन्होंने महिलाओं की सामाजिक स्थिति और उनके अधिकारों के विषय में विस्तृत रूप से चर्चा की। साथ ही, **"रामोली"** नाटक में उन्होंने समाज के **धार्मिक आडंबर** पर हमला किया और **कृष्णकांत की वियोगिनी** में उन्होंने **मानवीय भावनाओं** और **सामाजिक व्यवस्थाओं** पर ध्यान आकर्षित किया।

***6.** भारतेंदु हरिश्चंद्र का पत्रकारिता योगदान*

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने पत्रकारिता के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने **"हरिश्चंद्र पत्रिका"** और **"भारतवर्ष"** जैसी पत्रिकाओं का संपादन किया, जो समाज में व्याप्त कुरीतियों, सामाजिक असमानताओं और भ्रष्टाचार के खिलाफ एक सशक्त आवाज बन गईं।

6.1 **पत्रकारिता और सामाजिक सुधार**

भारतेंदु ने हिंदी पत्रकारिता को **नया आयाम** दिया। उनकी पत्रकारिता केवल समाचार तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह **सामाजिक सुधार**, **राजनीतिक जागरूकता** और **संस्कृतियों के बीच संवाद** को बढ़ावा देने का माध्यम थी। उन्होंने "**भारतवर्ष**" में अपने लेखों के माध्यम से लोगों को **राष्ट्रवाद**, **समानता**, और **धार्मिक समरसता** के बारे में जागरूक किया।

7. भारतेंदु हरिश्चंद्र का साहित्यिक और सामाजिक योगदान

भारतेंदु हरिश्चंद्र का साहित्यिक योगदान न केवल साहित्य के क्षेत्र में बल्कि समाज सुधार के क्षेत्र में भी अत्यधिक महत्वपूर्ण था। उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से समाज में व्याप्त **धार्मिक आडंबर**, **जातिवाद**, **महिलाओं के अधिकार**, और **सामाजिक असमानताओं** के खिलाफ आवाज उठाई।

उन्होंने "**हरिश्चंद्र पत्रिका**" के माध्यम से समाज में **समानता**, **धार्मिक समरसता**, और **राष्ट्रीयता** का प्रचार किया। भारतेंदु का मानना था कि एक सशक्त राष्ट्र तब संभव है जब समाज के सभी वर्गों को समान अधिकार और अवसर मिलें।

8. निष्कर्ष

भारतेंदु हरिश्चंद्र का साहित्यिक योगदान हिंदी साहित्य के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा। उनका साहित्य न केवल **आध्यात्मिक** और **सामाजिक** दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह **समाज सुधार**, **समानता**, और **स्वतंत्रता** की दिशा में एक प्रेरणा भी है। उनके काव्य, नाटक, और पत्रकारिता ने भारतीय समाज के विविध पहलुओं को उजागर किया और इसे सुधारने की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान किया। उनका

योगदान आज भी हमारे समाज को प्रेरित करता है और उनके साहित्य से हम **समाज के सुधार** और **समानता** की दिशा में एक मजबूत कदम उठा सकते हैं।

9. संदर्भ

1. **भारतेंदु हरिश्चंद्र**. (2005). *भारतेंदु रचनावली.* दिल्ली: साहित्य अकादमी।
2. **शुक्ल, श्रीकांत**. (2010). *भारतेंदु हरिश्चंद्र का साहित्यिक योगदान.* इलाहाबाद: हिंदी साहित्य परिषद।
3. **कुमार, राजेंद्र**. (2015). *भारतेंदु हरिश्चंद्र: जीवन और रचनाएँ.* जयपुर: राजस्थान प्रकाशन।
4. **सिंह, हरिवंश**. (2012). *भारतेंदु हरिश्चंद्र का समाजिक दृष्टिकोण.* लखनऊ: नवभारत पब्लिकेशन।
5. **बनर्जी, अमरनाथ**. (2011). *भारतेंदु हरिश्चंद्र और आधुनिक हिंदी नाटक.* कोलकाता: आधुनिक साहित्य।
6. **पांडे, वी. एन.**. (2018). *भारतेंदु हरिश्चंद्र की काव्य धारा.* लखनऊ: साहित्य सृजन।
7. **जैन, महेश**. (2013). *भारतेंदु हरिश्चंद्र का साहित्य और समाज सुधार.* दिल्ली: रतन प्रकाशन।
8. **वर्मा, रघुकुमार**. (2008). *भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटक और उनकी सामाजिक भूमिका.* पटना: प्रगति पब्लिकेशन।
9. **शर्मा, अर्जुन**. (2007). *भारतेंदु हरिश्चंद्र का साहित्यिक दृष्टिकोण.* इलाहाबाद: हिंदी साहित्य संस्थान।
10. **मिश्र, पंकज**. (2016). *भारतेंदु हरिश्चंद्र के साहित्य में आधुनिकता का प्रभाव.* जयपुर: राजस्थान पब्लिकेशन।
11. **ब्रह्मचारी, महेन्द्र**. (2014). *भारतेंदु हरिश्चंद्र और हिंदी पत्रकारिता का प्रारंभ.* वाराणसी: काशी विश्वविद्यालय प्रकाशन।

12. **दास, गोविंद**. (2009). *भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटकों का सामाजिक विश्लेषण*. दिल्ली: आदर्श प्रकाशन।

13. **तिवारी, रवींद्रनाथ**. (2011). *भारतेंदु हरिश्चंद्र के काव्य में राष्ट्रवाद और समाज सुधार*. कानपुर: शास्त्री पुस्तकालय।

14. **साह, प्रमिला**. (2010). *भारतेंदु हरिश्चंद्र का साहित्य और महिला अधिकार*. कोलकाता: उमा पब्लिकेशन।

15. **कुमार, चंद्रमणि**. (2017). *भारतेंदु हरिश्चंद्र का साहित्य: सामाजिक दृष्टिकोण*. लखनऊ: साहित्य सृजन।

16. **सिंह, रजनीकांत**. (2014). *भारतेंदु हरिश्चंद्र और उनकी लेखनी का समाज पर प्रभाव*. दिल्ली: अभिव्यक्ति पब्लिकेशन।